इसिमोड स्रोत पुस्तिका 2018/1 (हिंदी)

ICIMOD

FOR MOUNTAINS AND PEOPLE

सामुदायिक प्रशिक्षण पुस्तिका

च्यूरा शहद और च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला

अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र (इसिमोड) के विषय में

अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र (इसिमोड), काठमाँडू-नेपाल स्थित एक स्वतंत्र क्षेत्रीय ज्ञान संवर्द्धन एवं अध्ययन केन्द्र है जो हिन्दूकुश हिमालय (एच.के.एच.) के आठ क्षेत्रीय सदस्य राष्ट्रों, क्रमश: अफगानिस्तान, बंगलादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यान्मार, नेपाल एवं पाकिस्तान में सेवारत हैं । वैश्वीकरण एवं जलवायु परिवर्तन, नाजुक पर्वतीय पारिस्थितिकी तन्त्र की स्थिरता एवं पर्वतीय समुदायों के पारिस्थितिकी तन्त्र को प्रभावित कर रहे हैं ।

इसिमोड का उद्देश्य, ऊर्ध्व व क्षैतिज मुद्दों को प्रस्तुत करते हुए पर्वतीय समुदायों को इन परिवर्तनों को समझने में, इन्हें अपनाने एवं इनसे नये अवसरों की प्राप्ति में सहयोग करना है । इसिमोड, क्षेत्रीय सीमापरीय कार्यक्रमों को क्षेत्रीय सहयोगी संस्थानों को, अनुभवों के आदान-प्रदानों को एक क्षेत्रीय ज्ञान केन्द्र के रूप में सहयोग करता है ।

कुल मिलाकर, इसिमोड आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से सक्षम पर्वतीय पारितन्त्र, पर्वतीय समुदायों के जीवन स्तर को सुधारने एवं वर्तमान और भविष्य में निचले भू-भाग में निवास करने वाले अरबों लोगों के लिए महत्वपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र की सेवाओं को सतत् रखने के क्षेत्र में कार्य करता है ।

इसिमोड अपने मूल दाताओं (अफगानिस्तान, आस्ट्रेलिया, अस्ट्रिया, बंगलादेश, भूटान, चीन, भारत, म्यान्मार, नेपाल, नार्वे, पाकिस्तान, स्विदेन, और स्विट्जरलैण्ड) की सरकारों के सहयोग की सराहना करता है

इसिमोड स्रोत पुस्तिका 2018/1 (हिंदी)

सामुदायिक प्रशिक्षण पुस्तिका

च्यूरा शहद और च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला

अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र, मार्च 2018

प्रतिलिपी सर्वाधिकार © 2018
अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र में निहित

प्रकाशक
अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र, पोष्ट बक्स नं. ३२२६,
काठमाँडू, नेपाल

ISBN 978 92 9115 587 3 (printed)
978 92 9115 588 0 (electronic)

LCCN 2018-305029

लेखकहरु:
उमा प्रताप[१], इस्माइल मुहम्मद[१], ताशी दोर्जी[१],
कोरिना वॉलरैप[२], हाइकेजुंगेर-शर्मा[२], आइलिन लेमके[२]

निर्माण ठोली:
क्रिस्टोफर बट्लर (सिनियर इडिटर)
धर्मरत्न महर्जन (प्राविधिक सहयोग और साजसज्जा)

उदाहरण और चित्र: पिटर साम्डुप लेप्चा[३]

हिन्दी में अनुवाद:
पंकज तिवारी, प्रताप सिंह नगरकोटी, घनश्याम पाण्डे

१. अन्तर्राष्ट्रिय एकीकृत पर्वतीय विकास केन्द्र
२. Deutsche Gesellschaft für Internationale Zusammenarbeit (GIZ)
३. स्वतन्त्र चित्रकार

विशेष अभिस्वीकृति
सेन्ट्रल हिमालयन इन्वायरमेन्ट एसोसियेशन (चिया): पंकज तिवारी और परियोजना कार्मिक जो च्यूरा शहद की मूल्य श्रृंखला के प्रचार-प्रसार के लिए काम कर रहे हैं, और आगा खान रूरल सपोर्ट प्रोग्राम आफ पाकिस्तान के सदस्य ।

मुद्रण तथा वाइण्डिङ
क्वालिटि प्रिन्टिङ्ग प्रेश (प्रा.) लि., काठमाण्डौं, नेपाल ?????

पुनरुत्पादन
यह प्रकाशन पूर्ण या आंशिक रुप से शैक्षिक अथवा गैर-लाभकारी उद्देश्यों हेतु कापीराइट धारक से विशेष अनुमति लिए बिना ही पुनरुत्पादित किया जा सकता है । यद्यपि प्रकाशन में अवतरित जानकारी की अभिस्वीकृति अनिवार्य है । इसिमोड ऐसे प्रकाशन की प्रति प्राप्त करने में आभारी रहेगा जिसमें इस प्रकाशन का उपयोग एक स्रोत के रुप में किया गया हो । इसिमोड से लिखित अनुमतिके बगैर इस प्रकाशन का कोइ भी उपयोग, पुर्नरविक्रय या अन्य व्यवसायिक उद्देश्य हेतु नहीं किया जा सकता है ।

इस प्रकाशन में प्रस्तुत विचार एवं ब्याख्या लेखकों के है । ये इसिमोड से सम्बन्धित नहीं हैं तथा इनका किसी भी देश, क्षेत्र, शहर या उसके अधिकार क्षेत्र की कानूनी स्थिति, इसकी सीमाओं, सीमाओं के परिसीमन या उत्पादके समर्थन से कोई सम्बन्ध नहीं है । यह प्रकाशन निम्नलिखित विद्युतीय ढाँचे में उपलब्ध हैं ।
www.icimod.org/himaldoc

उद्धरण: इसिमोड (2018) च्यूरा शहद और च्यूरा उत्माद मूल्य श्रृंखला: सामुदायिक प्रशिक्षण पुस्तिका । इसिमोड स्रोत पुस्तिका 2018/1 (हिंदी), काठमाँडू: इसिमोड ।

हिन्दूकुश हिमालय क्षेत्र सीमापारीय पर्यावरण पहल के विषय में

हिन्दू कुश हिमालय एक अत्यन्त विविध भू-क्षेत्र है । यहां बायोमास और आवासीय क्षेत्रों में कई रूपों में परस्पर सम्बन्ध है । साथ ही साथ पारिस्थितिक तंत्र में लाभों के दृष्टिगत ऊर्ध्व और क्षैतिज सम्बन्ध हैं । जीव जगत की यह विविधता इस भू-क्षेत्र में जैव विविधता संरक्षण के लिए प्रेरित करती हैं । इसी क्रम में इस भू-क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इसिमोड और इसके सहयोगी संस्थानों ने कार्यक्रम के सहयोग के लिए 7 सीमापारीय भू-क्षेत्रों को चयनित किया है । पश्चिम से पूर्व की तरफ ये भू-क्षेत्र क्रमश: हिन्दूकुश, कराकोरम, पामीर, कैलाश, एवरेस्ट, कंचनजंघा, सूदूर पूर्व हिमालय और चेरापूंजी-चिट्टागांव हैं । सीमापारीय परिदृश्य संकल्पना भू-क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों क्रमश: (जैव विविधता परिक्षेत्र, खेती प्रणाली, वन क्षेत्र, (नमी युक्त) और जलागम क्षेत्रों) के संरक्षण और सतत् प्रयोग की परिकल्पना को सम्बोधित करते हैं । जोकि प्रशासनिक सीमारेखाओं की बजाय पारिस्थितिकी तंत्र द्वारा परिभाषित है । परियोजना का दृष्टिकोण लोक और सांस्कृतिक संरक्षण पर केन्द्रित है जो कि इस क्षेत्र के संसाधनों के संरक्षण के प्रयासों के लिए एक आवश्यक कदम है और सतत् और तर्कसंगत विकास के लिए सहयोगात्मक कार्यवाही में मदद करता है ।

पवित्र कैलाश भू-क्षेत्र के विषय में

चीन के तिब्बत स्वायत्त क्षेत्र के सूदूर पश्चिमी भाग, नेपाल के सुदूर पश्चिम क्षेत्र में आसन्न जिलों और उत्तरी भारत के उत्तराखण्ड राज्य के उत्तर पूर्वी भाग में स्थित पवित्र कैलाश भू-क्षेत्र (के.एस.एल.) लगभग 31,000 वर्ग कि.मी. के क्षेत्र में फैला है और एक विशेष, बहुसांस्कृतिक और विविध परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करता है ।

पवित्र कैलाश भू-क्षेत्र संरक्षण और विकास पहल (के.एस.एल.सी.डी.आई.) को तीन समीपवर्ती राष्ट्रों “चीन, भारत और नेपाल” के मध्य एक सीमापारीय सहयोग कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ किया गया है जो कि इन तीनों देशों के विभिन्न शोधों और विकास संगठनों के मध्य भागीदारी के माध्यम से विकसित किया गया है । इस कार्यक्रम का उद्देश्य पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधतता और आवासों के सतत् संरक्षण और समुदायों के सतत् विकास के साथ-साथ स्थाई समुदायों के बीच सांस्कृतिक संवादों का संरक्षण करना है ।

च्यूरा के विषय में

च्यूरा जिसे इंडियन बटर ट्री और च्यूरी या चिउरी (नेपाली भाषा में) के नाम से भी जाना जाता है, पवित्र कैलाश भू-क्षेत्र में उत्तराखण्ड के पिथौरागढ़ जिले के गांवों में, नेपाल के सुदूर पश्चिमी, मध्य पश्चिमी और मध्य भाग के जिलों में बहुतायत से पाया जाता है । च्यूरा एक बहुउद्देशीय वृक्ष है और जिन जिलों में यह पाया जाता है वहां के ग्रामीण आजीविका संवर्द्धन में यह वृक्ष बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । इसकी पत्तियां पशुओं के चारे के रूप में, इसके फूल शहद उत्पादन में, एवं मधुमक्खी पालन के लिए बहुत उपयोगी हैं, इसके बीजों से प्राप्त “घी” भोजन बनाने में सहायक होता है । इसका उपयोग गठिया, अल्सर और खुजली को ठीक करने में दवा की तरह किया जाता है । इसका प्रयोग कीट नाशक की तरह और कीटों से बचने वाले लेप की तरह भी किया जाता है ।

चित्र श्रृंखला: वयस्क जानकारी की एक कार्यप्रणाली

चित्र श्रृंखला समुदायों और इस विकास कार्यक्रम से जुड़े हुए अन्य क्षेत्रीय सहयोगियों के लिए एक सहभागीय, इनक्लूसिव वयस्क प्रशिक्षण पद्धति है ।

- यह पद्धति कठिन तकनीकी विषय को भाषा और सन्देश देने की दृष्टि से सरल बनाती है, जो क्षेत्रीय समुदायों, एन.जी.ओं. कार्मिकों और अन्य क्षेत्रीय सहयोगियों के समझ में आसानी से आ जाती है ।
- प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान सक्रिय रूप से सहयोग करने में मदद करती है ।
- प्रतिभागियों की विचारशीलता को बढ़ाने की ओर मार्गदर्शन करती है ।
- प्रतिभागियों और साथ ही प्रशिक्षकों के लिए एक गहन प्रक्रिया है, जो प्रशिक्षण के विषय को एक नई अर्न्तदृष्टि प्रदान करती है ।

प्रशिक्षण सामग्री, क्षेत्रीय अधिकारियों, सरकारी, गैर सरकारी संगठनों के परियोजना कार्मिकों द्वारा जो इस परियोजना के विषयक क्रिया क्षेत्र से जुड़े हुए है और जिन्हें इस विषय में पर्याप्त ज्ञान है, के प्रयोग हेतु है ।

इस पुस्तिका को प्रयोग करने की विधि

लक्षित समूह: समुदाय के सदस्य, क्षेत्रीय अधिकारी और स्वायत्त सहकारिता समूह जो च्यूरा शहद और च्यूरा उत्पादों में काम कर रहे हैं । प्रतिभागियों की आदर्श संख्या 20 से 30 होनी चाहिए । यदि समय की पर्याप्तता हो तो प्रतिभागियों की संख्या 60 तक हो सकती है ।

उद्देश्य: प्रतिभागियों को स्वस्थ एवं सतत् पारिस्थितिकी तन्त्र और उन्नत उत्पादन और साथ ही साथ च्यूरा शहद एवं उत्पादनों के विपणन की सम्भावना के बारे में बताना । साथ ही साथ प्रतिभागियों को च्यूरा शहद और च्यूरा उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन के कारण पड़ने वाले प्रभावों के बारे में भी जानकारी देना ।

अवधि: 1:30 से 2 घण्टे

ध्यान दें: एक अच्छी तरह से आयोजित कार्यशाला में फोटो श्रृंखला को उपयोग के साथ साथ कोई विशेष जानकारी देने हेतु प्रशिक्षक, एकल चित्रों का भी प्रयोग कर सकते हैं ।

प्रशिक्षण सत्र के सामान्य नियम

1. प्रत्येक प्रतिभागी को स्वतन्त्र रूप से और बिना बाधित किए उसका दृष्टिकोण अभिव्यक्त करने का मौका दिया जाए ।
2. संकोची और महिला प्रतिभागियों को चर्चा में सक्रिय रूप से शामिल करें क्योंकि ऐसे प्रतिभागी अकसर चुपचाप रहते हैं वहीं अधिक सक्रिय प्रतिभागी अपनी बात प्रभावी रूप से रखते है ।
3. हर प्रतिभागी को ध्यान से सुना जाए, और उसे आश्वस्त किया जाए कि प्रत्येक उत्तर या विचार महत्वपूर्ण है ।
4. कोई भी उत्तर या विचार गलत नहीं होता ।

प्रशिक्षण को सफल बनाना एक कठिन काम है और जिस तरह से आप प्रशिक्षक के रूप में समुदाय के सदस्यों को सम्बोधित करते हैं उस पर निर्भर करता है ।

च्यूरा शहद और च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला पर एक सफल और सक्षम प्रशिक्षण सत्र के तीन भाग हैं ।

1. तैयारी या उपक्रम
2. प्रशिक्षण का प्रावधान
3. मूल्यांकन

तैयारी या उपक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम का स्थान निर्धारित करें । प्रतिभागियों को स्थान, तिथि और समय के बारे में अग्रिम सूचना दे दें । सारी सामग्री एकत्र कर लें और उसे भली भाँति समझ लें । तस्वीरों को क्रम में व्यवस्थित कर लें । प्रतिभागियों के बैठने का स्थान एक अर्धगोलाकार क्रम में व्यवस्थित करें । यह सुनिश्चित कर लें कि प्रशिक्षण के दौरान तस्वीरों को देखने के लिए पर्याप्त रोशनी हो । महिला प्रतिभागियों का उत्साह वर्धन करें ।

प्रशिक्षण का प्रबन्धन

प्रथम चरण: अपना परिचय किसी क्षेत्रीय प्रतिनिधि या सहयोगी के माध्यम से करवायें । अपने विषय के क्षेत्र के और आपकी क्षेत्र की यात्रा के बारे में एक कहानी सुनाकर वातावरण को सकारात्मक बनाएं ।

द्वितीय चरण: किसी एक प्रतिभागी का चयन करें और उसे मध्य में बुलाएं । उसे प्रथम तस्वीर को लेकर प्रतिभागियों को दिखाने को कहें । चयनित प्रतिभागी तस्वीर को लेकर पूरे समूह में घुमायें ताकि सभी लोग तस्वीर को भली भांति देख लें कोई जल्दबाजी न करें ।

ध्यान दें: बेहतर रहेगा यदि आप ही प्रतिभागियों को तस्वीर दिखायें जिससे कि आप चर्चा की दिशा, गति और स्तर को निर्देशित कर सकेगें । पहले सभी प्रतिभागियों को केवल तस्वीर दिखायें उसके बाद चर्चा शुरू करें ।

तृतीय चरण: प्रश्न पूछना शुरू करें कि आप तस्वीर में क्या देख रहे हैं ? प्रतिभागियों को केवल तस्वीर की अन्तर-वस्तु की व्याख्या करने के लिए उत्साहित करें उससे जुड़ी अन्य बातों को नहीं । जब प्रतिभागी तस्वीर की व्याख्या कर रहें हो तब कोई भी उत्तर गलत न माना जाए । सुनिश्चित करें कि प्रतिभागियों को यह न लगे कि वे कोई गलती कर रहे हैं । यदि वो सम्भावित उत्तर नहीं दे रहे हैं तो वार्ता को सही दिशा में रखने के लिए प्रोत्साहित करें । प्रतिभागियों को तस्वीर की व्याख्या स्वयं न दें ।

चतुर्थ चरण: यदि प्रतिभागी (और आप) तस्वीर की व्याख्या से संतुष्ट हैं तो पुस्तिका में दिये गये क्रम के अनुसार दूसरी तस्वीर प्रस्तुत करें ।

पांचवां चरण: विषय से सम्बन्धित तस्वीरों को प्रदर्शित करने के बाद, प्रतिभागियों से इन तस्वीरों का प्रयोग करते हुए विभिन्न कहानियां बनाने को कहें । यह सुनिश्चित् कर लें कि सभी प्रतिभागी सम्बन्धित विषय के सन्देश और उद्देश्य को भली भाँति समझ जाएं तभी अगले विषय में जाएं । चर्चा की प्रासंगिकता को बनाये रखने के लिए केवल सम्बन्धित चित्रों को ही प्रदर्शित करें ।

छठा चरण: कृपया ध्यान दें कि आप तस्वीरों के क्रम को स्थिति के अनुरूप व्यवस्थित करें । आप कभी भी पहले से प्रदर्शित तस्वीरों को पुन: प्रदर्शित कर सकते हैं । प्रतिभागियों को तस्वीरों को सही क्रम में व्यवस्थित करने के लिए कहें या उनसे तस्वीरों को प्राथमिकताओं के अन्दर व्यवस्थित करने को कहें । स्थिति के अनुकूल रहें तस्वीरों के साथ प्रयोग करें और प्रतिभागियों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करें । उदाहरण के रूप में प्रतिभागियों को तस्वीरों के विभिन्न क्रमों में व्यवस्थित करें और बेहतर स्थितियों की चर्चा के लिए प्रेरित करें ।

मूल्यांकन

सत्र के अन्त में ये जानने के लिए प्रश्न पूछिये कि प्रतिभागी, विषय को अच्छी तरह समझ गये हैं । प्रयोग की गयी सामग्री और सत्र के बारे में प्रतिक्रिया लें । एकत्र की गयी प्रतिक्रिया के बारे में नोट बनायें और इनका प्रयोग अगले सत्र में करें ।

विषय सूची

भाग 1: **शहद मूल्य श्रृंखला** 1

1. जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी तंत्र और मधुमक्खियों के बीच सम्बन्ध 2
2. शहद मूल्य श्रृंखला: परम्परागत तरीके 4
3. संरक्षण चिंतन और सम्भव मूल्य परिवर्द्धन 6

भाग 2: **च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला** 9

4. च्यूरा बृक्ष की उपयोगिता, पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन में इसका महत्व 10
5. च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला: परम्परागत तरीके 12
6. च्यूरा उत्पादों के लिए मूल्य श्रृंखला में सुधार: स्वयं सहायता समूह का गठन 14
7. च्यूरा उत्पादों के लिए मूल्य श्रृंखला में सुधार: स्थिरता और सतत्ता के उपाय 16

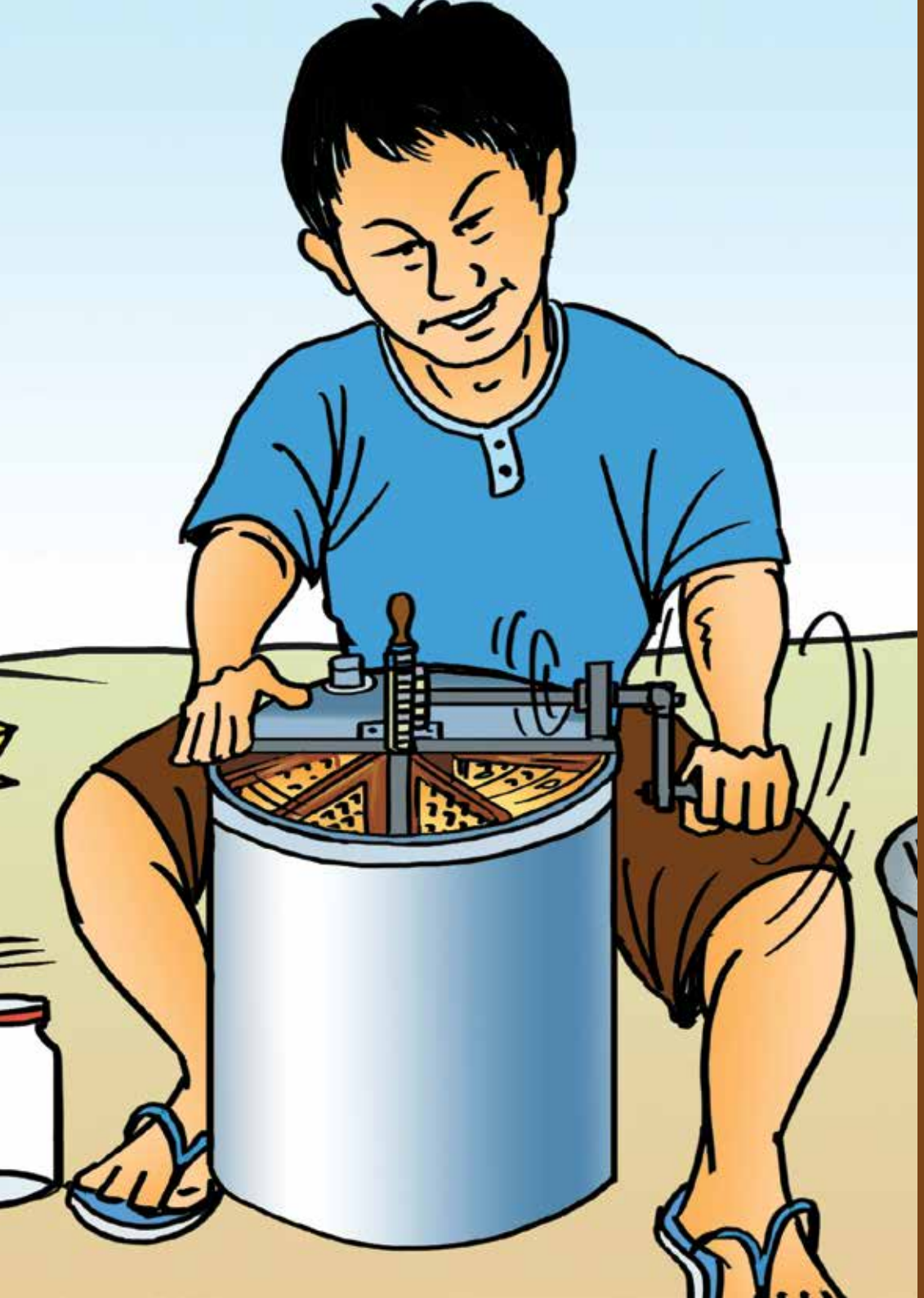

भाग-1

शहद मूल्य श्रृंखला

1. जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिकी तंत्र और मधुमक्खियों के बीच सम्बन्ध

विषय का उददेश्य

प्रतिभागियों को शहद उत्पादन और पारिस्थितिकी तंत्र के बीच के सम्बन्ध को और मधुमक्खीपालन पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के विश्लेषण के बारे में समझाना

सम्झीय

सन्देश

- मधुमक्खियां परागण सेवाऐं प्रदान करती हैं जिससे फसल उत्पादन में वृद्वि होती है और जैव विविधता सन्तुलित बनी रहती है ।
- अधिक मधुमक्खियां अर्थात् बेहतर उत्पादन और एक स्वस्थ्य पारिस्थितिकी तंत्र ।
- जलवायु में परिवर्तन दीर्घकालिक मधुमक्खी पालन को सकारात्मक और नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है । अत: उचित समय में अनुकूल उपायों के माध्यम से प्रतिक्रिया करें:
  - विविध क्षेत्रोंमें मधुमक्खियों की उपलब्धता का निरीक्षण करें ।
  - अपने क्षेत्र में मधुमक्खी पालन के लिए महत्वपूर्ण पौंधों की उपलब्धता में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का निरीक्षण करें (उदाहरण-च्यूरा व अन्य पौंधे) ।
  - ध्यान दें, यदि मधुमक्खियां अन्य क्षेत्रों और/या अन्य पारिस्थितिकी प्रणालियों की तरफ प्रवास कर गयी हैं ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

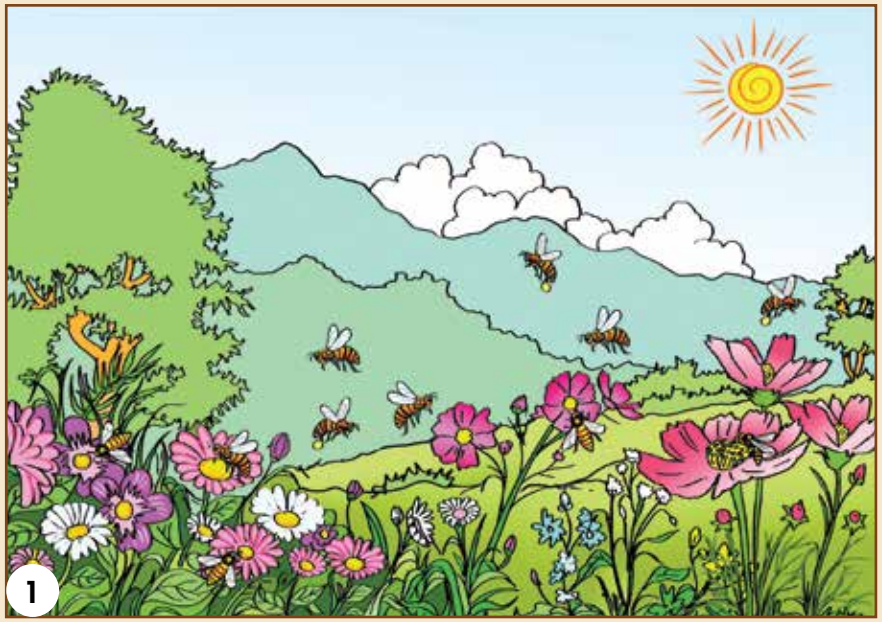

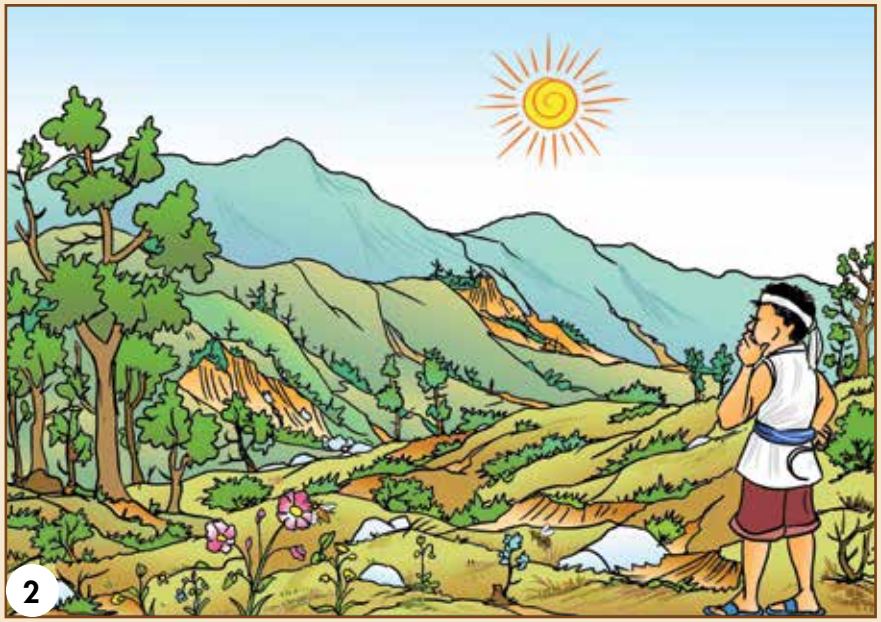

तस्वीरों के लिए संकेतक

1. मधुमक्खियों के साथ पुष्प क्षेत्र
2. भू-क्षेत्र में कम पुष्प और मधुमक्खियों की संख्या का अवलोकन करते हुए एक कृषक
3. नये क्षेत्रों में वृक्षारोपण

2. शहद मूल्य श्रृंखलाः परम्परागत तरीके

विषय उद्देश्य

प्रतिभागियों को शहद उत्पादन के विभिन्न चरणों को समझाना और मूल्य श्रृंखला की संल्पना की भी जानकारी देना ।

सन्देश

सझीय

- पाम्परिक मधुमक्खी पालन में जालों और ढाड़े का प्रयोग, अपरिष्कृत शहद के निष्कर्षण की प्रकिया, पैकिंग व बिक्री के स्थानीय तरीके शामिल हैं ।
- एक मूल्य श्रृंखला एक उत्पाद के उत्पादन की प्रक्रिया इसके स्रोत से लेकर उपयोग तक की प्रक्रिया को स्थापित करती है ।
- हर उत्पाद अन्तिम उभोक्ता तक पहुंचने से पहले मूल्य सम्वर्द्धन की प्रक्रियाओं की श्रृंखला से गुजरता है ।
- मूल्य श्रृंखला के आदानों में प्राकृतिक संसाधन, कृषि आदान, विभिन्न लोगों द्वारा किये गये श्रम कार्य सम्मिलित हैं ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

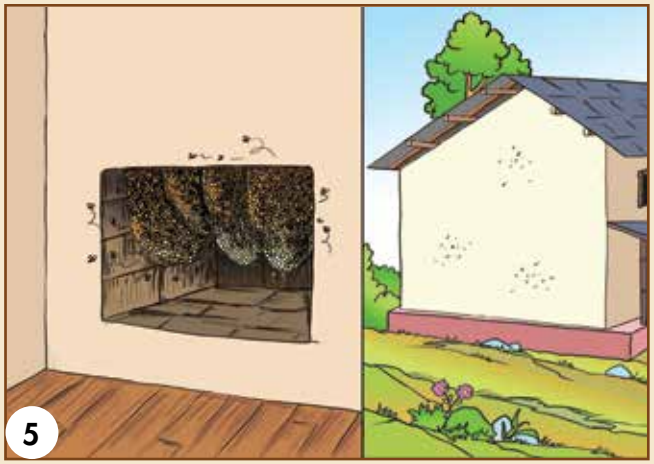

चित्रों के संकेतक

4. पारम्परिक ढाड़े
5. पारम्परिक जाले
6. शहद निकालने का पारम्परिक तरीका
7. शहद की पारम्परिक पैकिंग
8. गांवों में शहद का व्यक्तिगत विपणन
9. गांवों में शहद की खपत

3. संरक्षण चिंतन और सम्भव मूल्य परिवर्द्धन

विषय उददेश्य

प्रतिभागियों को शहद उपज, शहद की गुणवत्ता और बिक्री में सुधार के विभिन्न तरीकों और उनके प्रयोग के बारे में जानकारी देना ।

सन्देश

मधुमक्खी पालन को विभिन्न तरीकों द्वारा सुधारा जा सकता है:

- शहद की बेहतर गुणवत्ता और मात्रा के लिए उन्नत मौन बक्सों का प्रयोग करना ।
- स्वच्छता और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शहद निष्कासनयंत्र का प्रयोग ।
- आकर्षक पैंकिंग तैयार करना ।
- उत्पादों की ब्राडिंग करना और उनको विपणन के लिए बाजार से जोड़ना ।
- स्वयं सहायता समूह या सहकारी समितियों के माध्यम से सामूहिक कार्यवाही का संवर्द्धन ।
- सूक्ष्म वित्तीय सहयोग के उपयोग की सुविधा के लिए सहयोग ।
- दुकानों में शहद का विपणन ।

सम्भीय

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

चित्रों के संकेतक

10. बेहतर मौन बक्से
11. मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण
12. शहद निष्कासन यंत्र का प्रयोग
13. कन्टेनर, लेबल और स्वच्छ पैकिंग के साथ सुसज्जित समूह
14. शहद का बाजार में विपणन
15. समूह की बैंक और सूक्ष्म वित्तीय सहयोग योजना तक पहुंच

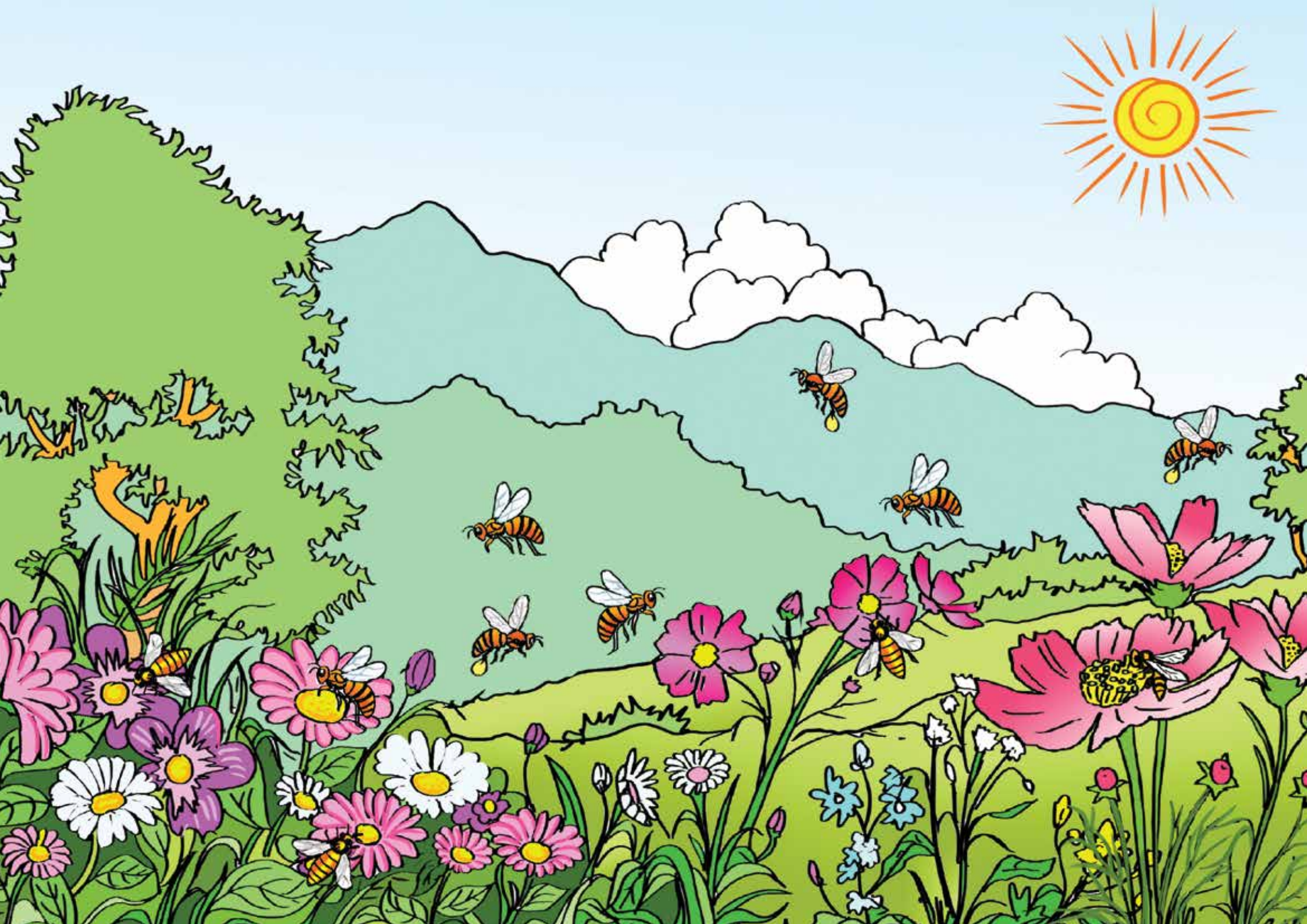

भाग-2

च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला

4. च्यूरा वृक्ष की उपयोगिता, पारिस्थितिकी तंत्र और जलवायु परिवर्तन में इसका महत्व

सम्भीय

विषय उददेश्य

प्रतिभागियों को आजीविका एवं पारिस्थितिकी तंत्र में च्यूरा वृक्ष का महत्व बताना और उन्हें जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले प्रभावों के बारे में सजग करना ।

सन्देश

मधुमक्खी पालन को विभिन्न तरीकों द्वारा सुधारा जा सकता है:

- च्यूरा पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण वृक्ष है ।
- च्यूरा पेड़ कुछ क्षेत्रों में एक स्थानीय प्रजाति है और स्थानीय जलवायु के लिए अनुकूलित है ।
- च्यूरा वृक्ष मृदा एवं जल संरक्षण के लिए उत्कृष्ट है ।
- च्यूरा वृक्ष के कई उपयोग हैं:
  - बीज घी प्राप्त करने के लिए ।
  - पत्तियों का उपयोग चारा घास के लिए ।
  - लकड़ी का उपयोग ईंधन और फर्नीचर के लिए ।
  - छाल का उपयोग औषधि और कीटनाशक बनाने में ।
  - बीज की खली का उपयोग कीट और मच्छर भगाने की दवा के रूप में ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

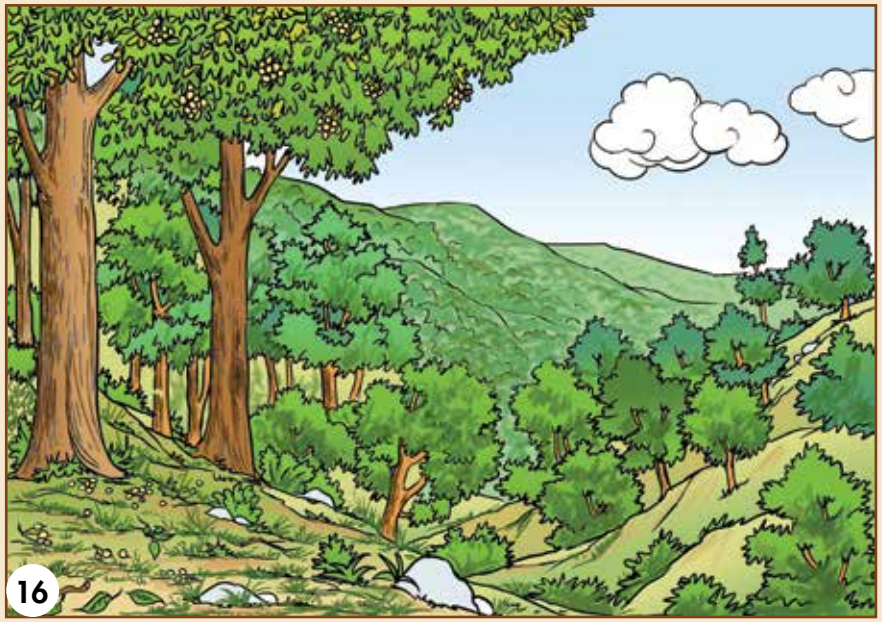

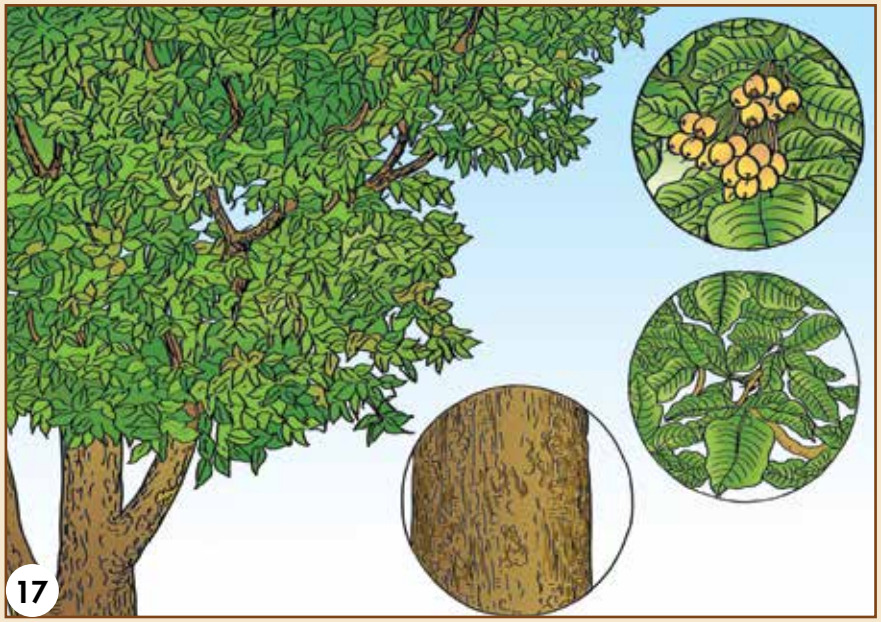

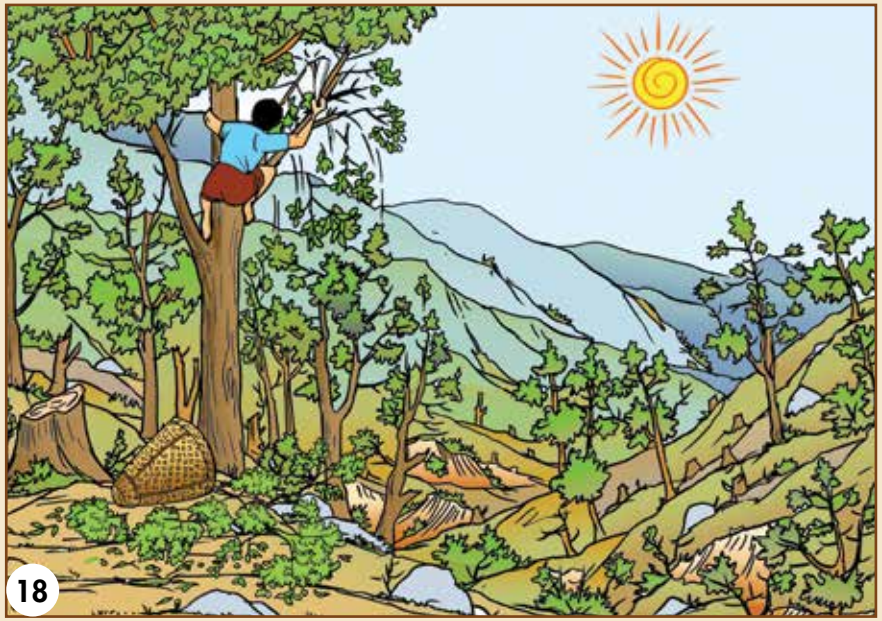

चित्रों के संकेतक

16. च्यूरा वृक्षों के साथ भूदृश्य
17. च्यूरा वृक्ष पत्तियों, बीज और छाल की विस्तृत जानकारी के साथ
18. कृषकों द्वारा च्यूरा वृक्षों की डालियों का कटान

5. च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला: परम्परागत तरीके

विषय उददेश्य

प्रतिभागियों को च्यूरा घी उत्पाद के विभिन्न चरणों की जानकारी देना ।

सन्देश

च्यूरा घी के निष्कर्षण के पाम्परिक क्रमबद्ध तरीके:

- वर्षा ऋतु में च्यूरा के बीजों का संग्रह ।
- कुछ बीजों का पुन: वृक्षारोपण के लिए संग्रह ।
- बीजों को उबालना ।
- बीजों को दल कर छिलका निकालना ।
- बीजों की गुठलियों को सुखाना ।
- परम्परागत रूप से आग का उपयोग करके गुठलियों को उबालना ।
- पेराई मशीन द्वारा च्यूरा के तेल का निष्कर्षण ।
- तेल की कड़वाहट कम करने और शुद्धिकरण हेतु छाछ के साथ गरम करना ।
- घरेलू खपत ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

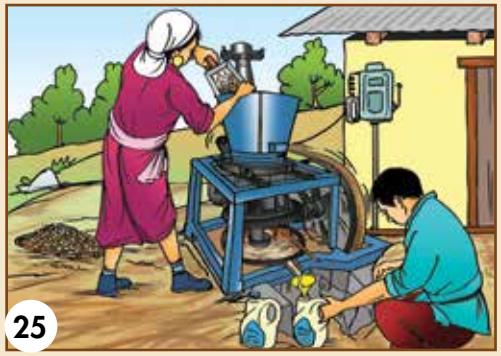

चित्रों के संकेतक

19 च्यूरा के बीजों का संग्रहण

20 बीजों का भण्डारण

21 बीजों को उबालना

22 बीजों का छिलका उतारना

23 बीजों की गुठलियों को घूप में सुखाना

24 बीजों की गुठलियों को आग पर भूनना

25 पेराई मशीन से तेल का निष्कासन

26 तेल की कड़वाहट कम करने के लिए और शुद्धिकरण हेतु छाछ के साथ गरम करना

27 च्यूरा घी की घरेलू खपत

6. च्यूरा उत्पादों के लिए मूल्य श्रृंखला में सुधार: स्वयं सहायता समूह का गठन

विषय उददेश्य

प्रतिभागियों को स्वयं सहायता समूह और मूल्य श्रृंखला के विश्लेषण के गठन के माध्यम से सामूहिक विपणन नियम और फायदों से अवगत करवाना ।

सम्भीय

सन्देश

छोटे पैमाने पर उत्पादकों के लिए मूल्य श्रृंखला में स्थिरता और सुधार करने के लिए उपाय:

- स्वयं सहायता समूह (एस.एच.जी.)/संयुक्त देयता समूह (जे.एल.जी.) या सहकारी सहमति का गठन ।
- मूल्य श्रृंखला में शामिल सहयोगियों को सुनिश्चित् करना ।
- सुनिश्चित् करना कि सभी सहयोगी साथ में कार्य करें ।
- सुनिश्चित् करना कि मूल्य श्रृंखला के सभी सहयोगी और घटक एक ही प्रकार के नियमों का पालन करें और एक ही उद्देश्य के लिए कार्य करें ।
- एक मजबूत मूल्य श्रृंखला सुधार योजना अपनायें:
  - योजना बनाने में सभी सहभागियों को शामिल करें ।
  - सभी के लिए समान नियम और लक्ष्य निर्धारित करें ।
  - सुनिश्चित् करें की हर कोई समान नियमों से सहमत हो ।
- परिवर्तनों का लगातार विश्लेषण करते रहें ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

चित्रों के संकेतक

28 किसान साथ बैठकर स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए वार्ता कर रहे है

24 बीजों की गुठलियों को आग पर भूनना

25 पेराई मशीन से तेल का निष्कासन

29 स्वयं सहायता समूह साथ बैठकर नियमावली से सहमत हो रहे है

7. च्यूरा उत्पादों के लिए मूल्य श्रृंखला में सुधार: स्थिरता और सतत्ता के उपाय

विषय उददेश्य

प्रतिभागियों को च्यूरा उत्पाद मूल्य श्रृंखला के सुधार, स्थिरता और सतत्ता के तरीकों व, इस विषय में वार्ता के बारे में अवगत करवाना ।

सम्भीय

सन्देश

च्यूरा मूल्य श्रृंखला में गुणवत्ता के तरीके:

- च्यूरा वृक्षारोपण एवं नर्सरी निर्माण में सहयोग ।
- सूक्ष्म वित्तिय सहयोग के लिए बैंक से जुड़ना ।
- बीजों का छिलका निकालने हेतु मशीन का प्रयोग करना ।
- निष्कासन के लिए प्रौद्योगिकी में सुधार करना ।
- साबुन निर्माण के प्रशिक्षण में सहयोग करना ।
- ब्रांडिंग एवं पैकिंग में सुधार करना ।
- उत्पादों का मेलों और प्रर्दशनियों में विपणन करना ।

चित्रों का वर्णन करें और सन्देश दें

चित्रों के संकेतक

28 किसान साथ बैठकर स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए वार्ता कर रहे हैं

3 नये क्षेत्रों में च्यूरा वृक्षारोपण

30 च्यूरा बीजों का छिलका निकालने हेतु मशीन का प्रयोग

31 साबुन निर्माण का प्रशिक्षण

32 ब्रांडिंग एवं पैकिंग

33 च्यूरा उत्पादों का नगर के बाजार में विपणन

34 बैंक खाते खुलवाना

चित्रों का सारांश

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
1		मधुमक्खियों के साथ पुष्प क्षेत्र
2		भू-क्षेत्र में कम पुष्प और मधुमक्खियों की संख्या का अवलोकन करते हुए एक कृषक
3		नये क्षेत्रों में वृक्षारोपण
4		पारम्परिक ढाड़े
5		पारम्परिक जाले

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
6		शहद निकालने का पारम्परिक तरीका
7		शहद की पारम्परिक पैकिंग
8		गांवों में शहद का व्यक्तिगत विपणन
9		गांवों में शहद की खपत
10		बेहतर मौन बक्से

चित्रों का सारांश

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
11		मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण
12		शहद निष्कासन यंत्र का प्रयोग
13		कन्टेनर, लेबल और स्वच्छ पैकिंग के साथ सुसज्जित समूह
14		शहद का बाजार में विपणन
15		समूह की बैंक और सूक्ष्म वित्तीय सहयोग योजना तक पहुंच

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
16		च्यूरा वृक्षों के साथ भूदृश्य
17		च्यूरा वृक्ष पत्तियों, बीज और छाल की विस्तृत जानकारी के साथ
18		कृषकों द्वारा च्यूरा वृक्षों की डालियों का कटान
19		च्यूरा के बीजों का संग्रहण
20		बीजों का भण्डारण

चित्रों का सारांश

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
21		बीजों को उबालना
22		बीजों का छिलका उतारना
23		बीजों की गुठलियों को घूप में सुखाना
24		बीजों की गुठलियों को आग पर भूनना
25		पेराई मशीन से तेल का निष्कासन

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
26		तेल की कड़वाहट कम करने के लिए और शुद्धिकरण हेतु छाछ के साथ गरम करना
27		च्यूरा घी की घरेलू खपत
28		किसान साथ बैठकर स्वयं सहायता समूह के गठन के लिए वार्ता कर रहे हैं
29		स्वयं सहायता समूह साथ बैठकर नियमावली से सहमत हो रहे है
30		च्यूरा बीजों का छिलका निकालने हेतु मशीन का प्रयोग

चित्रों का सारांश

क्र.सं.	चित्र	चित्रों के संकेतक
31		साबुन निर्माण का प्रशिक्षण
32		ब्रांडिंग एवं पैकिंग
33		च्यूरा उत्पादों का नगर के बाजार में विपणन
34		बैंक खाते खुलवाना

नोट:

© ICIMOD 2018

International Centre for Integrated Mountain Development
GPO Box 3226, Kathmandu, Nepal
Tel +977 1 5275222 **Fax** +977 1 5275238
Email info@icimod.org **Web** www.icimod.org

ISBN 978 92 9115 587 3